पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता — मॉड्यूल 6 — होशे का परिचय — विषय-वस्तु और संरचना

विचार-विमर्श के प्रश्न

1. आपको इस अध्याय में क्या सबसे अच्छा लगा, या आपने क्या सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी? आपके मन में क्या प्रश्न थे?
2. होशे ने भविष्यवाणी की कि इस्राएल के दंड के बाद आशीषें आएँगी। होशे के शब्दों से आपको क्या राहत और प्रोत्साहन मिलता है? आप दूसरे विश्‍वासियों प्रोत्साहित करने के लिए होशे के शब्दों का कैसे प्रयोग कर सकते हैं?
3. क्या भविष्यद्वक्ता का पदभार आज भी सक्रिय है? यदि हाँ, किन रूपों में? यदि नहीं, तो क्यों नहीं?
4. आज आपकी संस्कृति में या आपके कलीसियाई समुदाय में किस प्रकार की मूर्तिपूजा या परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्यता को सहा जाता है? आपकी सेवकाई इस मूर्तिपूजा को कैसे उजागर कर सकती है और इससे छुटकारा दिला सकती है?
5. होशे और गोमेर के बीच का संबंध हमें आज परमेश्वर के साथ कलीसिया के संबंध के बारे में क्या सिखाता है?
6. होशे और गोमेर के बीच का संबंध हमें आज आपके साथ कलीसिया के संबंध के बारे में क्या सिखाता है?
7. दृश्य और अदृश्य कलीसिया का वर्णन कीजिए।
8. पवित्रशास्त्र दृश्य और अदृश्य कलीसिया के बीच अंतर दर्शाता है। आपकी मंडली में अविश्वासियों के होने की संभावना, आपकी मसीही गवाही में, यहाँ तक कि कलीसिया में भी, कैसे आपकी सहायता करती है?
9. होशे हमें बताता है कि परमेश्वर ने अपने लोगों से एक प्रिय बालक के समान प्रेम किया, लेकिन उसके प्रेम ने उसे उन्हें अनुशासित करने से नहीं रोका। इब्रानियों 12:7-11 पढ़ें। यह उस तरीके को कैसे चुनौती देता है जिसमें हमें इस जीवन में आने वाले अस्थायी दंड को देखना चाहिए?

**समीक्षा कथन :** दंड की अवधि के बाद इस्राएल अंत के दिनों में परमेश्वर की आशीषों को ग्रहण करेगा।

**विषय का अध्ययन 1 :** गोमेर वेश्यावृत्ति की ओर गई। जैसे गोमेर ने अपनी वैवाहिक वाचा को तोड़ दिया, वैसे ही इस्राएल और यहूदा ने भी परमेश्वर के साथ अपनी वाचा को तोड़ दिया। परमेश्वर ने होशे को आज्ञा दी कि वह उसे अपने घर ले आए और उससे फिर से प्रेम करे। जैसे होशे ने गोमेर के साथ अपने प्रेम और अपनी वाचा को फिर से स्थापित किया, वैसे ही परमेश्वर ने अंत के दिनों में अपने लोगों के साथ अपने प्रेम और अपनी वाचा को फिर से स्थापित करने की प्रतिज्ञा की। यद्यपि, होशे ने उससे कहा कि वह बहुत दिनों तक बिना पुरुष के रहेगी। या इस बात का प्रतीक था कि इस्राएल को लंबे समय तक विनाश सहना पड़ेगा। लेकिन विनाश की इस लंबी अवधि के बाद इस्राएल को परमेश्‍वर की भलाई और आशीष प्राप्त होगी। हम इसे दाऊद के पुत्र यीशु के द्वारा होते हुए देखते हैं। वह हम पापियों से कैसे प्रेम कर सकता है? क्योंकि दाऊद के पुत्र यीशु ने हमें छुड़ाने के लिए कीमत चुकाई — उसने हमारे बदले मृत्यु और परमेश्वर के दंड को सहा।

**विषय का अध्ययन 2 :** जेरेमी कैरेन से बहुत प्रेम करता था। जब वे 20 के दशक में ही थे तो उनकी शादी हो गई। पाँच साल बाद, कैरन घर छोड़कर जा चुकी थी और जेरेमी को नहीं पता था कि वह कहाँ है। कुछ वर्षों बाद, उसने उसे रात में सड़कों पर देखा। वह वेश्या बन गई थी। वह शारीरिक और भावनात्मक दोनों तरह से एक बुरी स्थिति में थी। जेरेमी यह देखकर बहुत दुखी हुआ। यह एक बुरे स्वप्न जैसा था। लेकिन जेरेमी अब भी उससे प्रेम करता था। वह उसे वापस घर ले आया और प्रेमपूर्वक तब तक उसकी देखभाल की जब तक कि वह फिर से मजबूत नहीं हो गई।

**विषय का अध्ययन 3 :** परमेश्वर ने स्वर्ग के न्यायकक्ष में घोषणा की कि उत्तरी इस्राएल उसके शापों के कष्टों को सहेगा (2:2-23)। परंतु परमेश्वर ने उन आशीषों के बारे में भी बात की जो इस्राएल के दंड के बाद आएँगी (2:14-23)। आशीष के दो पहलू हैं : 1) वह भविष्य में इस्राएल के साथ एक नई वाचा बाँधेगा, और 2) उसकी आशीषों से प्रकृति फिर से स्थापित होगी और अश्शूर से आने वाली हिंसा का अंत होगा। यह यीशु में होना शुरू हो गया है जिसके द्वारा हम नई वाचा का अनुभव करते हैं। एक दिन, जब मसीह वापस आएगा, तब संसार में हिंसा नहीं रहेगी।

मनन के प्रश्न :

1. आपके विचार से होशे को एक वेश्या से विवाह करने और उसके जाने के बाद उसे वापस लाने पर कैसा महसूस हुआ होगा?
2. जेरेमी की जगह अपनी कल्पना करें (विषय का अध्ययन 2)। आपको कैसा महसूस होगा? आप क्या करेंगे?
3. अपने सीखनेवाले समुदाय के साथ चर्चा करें कि परमेश्वर को कैसा महसूस होता होगा जब उसकी दुल्हन उससे घृणापूर्ण व्यवहार करती है।
4. बाइबल कहती है कि हम पवित्र आत्मा को शोकित कर सकते हैं (इफिसियों 4:30) जिसे यीशु ने हमारे साथ रहने के लिए भेजा है। इसका अर्थ है कि हम उसे दुखी करते हैं। क्या आपको ऐसे समय याद हैं जब आपने पवित्र आत्मा को — और इस रीति से यीशु को — दुखी किया हो? अपने सीखने वाले समुदाय के साथ इस पर चर्चा करें।

दिए जानेवाले कार्य :

* जितना अधिक आप अपने पाप को समझेंगे, उतना ही अधिक आप आपके बदले मरने के लिए प्रभु यीशु के प्रति आभारी होंगे। परखें कि आप कितने आभारी हैं। आपके दैनिक कार्यों और दूसरों के साथ व्यवहार में आपका आभार कैसे प्रकट होता है?
* यीशु ने उनसे प्रेम किया जो अप्रिय हैं। इस सप्ताह किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति मसीह का प्रेम दिखाने के लिए कुछ करें जिसे आप नहीं जानते या बहुत अच्छी तरह से नहीं जानते हैं — अर्थात् कोई ऐसा व्यक्ति जिसे अप्रिय माना जा सकता है। बाद में लिखकर अपने अनुभव पर विचार करें — हो सके तो अपनी डायरी में लिखें।